व्यापक यौनिकता शिक्षा | सम्भावनाओं का विस्तार

ईशा बडकस

अब जब मैं पीछे मुड़कर अपने स्कूली वर्षों को देखती हूँ, तो मुझे एहसास होता है कि इतिहास, विज्ञान, गणित और साहित्य जैसे विषयों ने मेरे आस-पास की दुनिया को समझने के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों को खोला। कभी-कभी नई अवधारणाओं को सीखने में मज़ा आता था और कभी-कभी मैं उन्हें सिर्फ़ रट लिया करती थी! पर अगर आज की समझ से मैं देखूँ, तो मुझे लगता है कि जिस बात पर ध्यान नहीं दिया गया वह है मेरे भीतर मौजूद दुनिया को समझना और उसे स्वीकार करना सीखना। जब मैं बड़ी हो रही थी, तो मेरे मन में अपने शरीर, उसके रूप-रंग और अन्य जटिल भावनाओं के बारे में बहुत सारे सवाल थे। लेकिन पता नहीं क्यों, मुझे इन सवालों से जूझने के तरीक़े कभी नहीं मिले। मेरे लिए, यह समझना काफ़ी हालिया खोज थी कि जब मुझे माहवारी होती है तो दरअसल मेरे शरीर के साथ क्या होता है, जब मैं नए लोगों से मिलती हूँ तो मुझे घबराहट क्यों होती है या मुझे ग़ुस्सा या उदासी का अनुभव कैसे होता है। इस खोज में, मैंने हमेशा महसूस किया है कि आत्म-जागरूकता (ख़ुद को जानने) की प्रक्रिया जल्दी शुरू हो जानी चाहिए थी। मेरा यह दृढ़ मत है कि हमारे स्कूली पाठ्यक्रम को सक्रिय भूमिका निभाते हुए शुरुआती सालों से ही हमारे शरीर और भावनाओं पर संवाद करने के लिए स्थान बनाने चाहिए।

यह लेख व्यापक यौनिकता शिक्षा (सीएसई) विषय पर अक्षरनन्दन स्कूल, पुणे के कक्षा-5 के विद्यार्थियों के साथ जुड़ने के मेरे हालिया संक्षिप्त अनुभव के बारे में है। इस लेख में बच्चों के लिए एक सुरक्षित और खुला स्थान बनाने के महत्त्व पर भी बात की गई है ताकि वे उनके शरीर, भावनाओं व उनके आस-पास होने वाली कई चीज़ों से जुड़ी उन विभिन्न समस्याओं और जिज्ञासाओं के बारे में बात कर सकें और सवाल पूछ सकें जो काफ़ी हद तक अस्पष्ट या रहस्यमयी रहती हैं।

व्यापक (Comprehensive) यौनिकता शिक्षा क्या है?

व्यापक यौनिकता शिक्षा यौनिकता का एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है और एक ऐसा साझा स्थान बनाने और साझा करने की कल्पना करती है जो जानकारी व कौशल देने के साथ ही खोजबीन करने, कल्पना करने और सबसे महत्त्वपूर्ण बात, हमारी धारणाओं पर सवाल उठाने के मौक़े देता है!

'यौनिकता विचारों, कल्पनाओं, इच्छाओं, मान्यताओं, दृष्टिकोणों, मूल्यों, व्यवहारों, परम्पराओं, भूमिकाओं और सम्बन्धों में अनुभव और व्यक्त की जाती है। यौनिकता जैविक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, कानूनी, ऐतिहासिक, धार्मिक और आध्यात्मिक कारकों की परस्पर क्रिया से प्रभावित होती है।' (विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा दी गई मसौदा परिभाषा का संक्षिप्त संस्करण, 2006)।

सीएसई को एक ऐसे घटक के रूप में देखना होगा जो पाठ्यक्रम के अकादमिक हिस्से से शुरू होकर विस्तृत होता रहता है और विभिन्न विषयों में शामिल अलग-अलग टॉपिक और थीम पर ध्यान देता है। उदाहरण के लिए, जब विद्यार्थी अपनी पाठ्यपुस्तकों से अपने शरीर के विभिन्न अंगों के बारे में सीखेंगे, सीएसई घटक इस बारे में एक संवाद शुरू कर सकता है कि शरीर कैसे विभिन्न रूपों वाले होते हैं, कोई आदर्श शारीरिक रूप या आकार नहीं है। इस प्रकार, यह न सिर्फ़ हमारे शरीर को जैसे वे हैं वैसे ही स्वीकार करने की प्रक्रिया शुरू करता है, बल्कि हमारे आस-पास काम करने वाली मज़बूत रूढ़ियों के प्रति संवेदनशीलता भी लाता है।

शुरुआती सालों में

अपने शुरुआती सालों में, बच्चे अपने माता-पिता और क़रीबी परिचितों की मदद से दुनिया को समझते हैं। उन्हें अपनी अलग-अलग पहचानों को लेकर संकेत, सुराग़ और प्रतीक मिलते रहते हैं। जब तक विद्यार्थी कक्षा-5 तक पहुँचते हैं, तब तक वे समाजीकरण की कई परतों से गुज़र चुके होते हैं और आगे भी गुज़रते रहेंगे। समाजीकरण के एजेंट, मुख्य रूप से मीडिया और फैशन बाज़ार, शरीर की एक ऐसी छवि प्रस्तुत करते हैं जिसे 'आदर्श' माना जाता है और ऐसे व्यवहार को पेश करते हैं जिसे 'कूल' माना जाता है। यह स्थिति उन बच्चों को, जो इन मानकों के अनुरूप नहीं होते, जैसे वे हैं वैसे ही स्वीकार करने से रोकती है। चूँकि अपने शरीर और अपनी भावनाओं के बारे में बात करना परिवार के सामने भी एक 'वर्जित' विषय होता है, इसलिए अपने शारीरिक अनुभवों, आनन्द, असुविधाओं और यहाँ तक कि यौन शोषण के बारे में बात करने के लिए उचित शब्दावली या भाषा का अभाव अभी तक बना हुआ है।

संवाद शुरू करने के लिए कहानी सुनाना

मैं एक सीएसई ढाँचा बना रही हूँ जिसकी प्रकृति चक्राकार है और यह इस बात की वक़ालत करता है कि शिक्षा के शुरुआती सालों से ही सीएसई औपचारिक पाठ्यक्रम का एक सक्रिय हिस्सा होना चाहिए। हालाँकि, जब तक इस ढाँचे को कक्षा-व्यवस्था के साथ अपनाने का प्रयास नहीं किया जाता है, तब तक इसमें आवश्यक संशोधन करने और इसे परिस्थिति अनुरूप बनाने में मुश्किल होगी। इसे देखते हुए, अक्षरनन्दन स्कूल से इस प्रोजेक्ट के लिए सम्पर्क किया गया। 1992 में शुरू हुआ यह स्कूल, केजी से 10वीं कक्षा तक सरकारी मान्यता प्राप्त, ग़ैर-सहायता प्राप्त स्कूल है। इसमें प्रत्येक कक्षा में सिर्फ़ 40 विद्यार्थी हैं। हालाँकि स्कूल स्टेट बोर्ड के औपचारिक ढाँचे का पालन करता है, लेकिन इसने पाठ्यक्रम को प्रासंगिक और जीवन से जोड़ने के लिए नई पद्धतियों को अपनाया है।

मेरा जुड़ाव हर महीने कक्षा-5 और 9 के विद्यार्थियों के साथ होता है। बड़े विद्यार्थियों के साथ मैं बातचीत को ज़्यादा सीधे तरीक़े और खुलकर करने की कोशिश करती हूँ। लेकिन कक्षा-5 के विद्यार्थियों के साथ जटिल सामाजिक सम्बन्धों के बारे में संवाद करने के लिए मैं कहानी सुनाने को एक माध्यम के रूप में इस्तेमाल करती हूँ और बच्चों को अपनी भावनाओं को ज़ाहिर करने के लिए प्रोत्साहित करती हूँ।

जामलो चलती गई : मैंने समीना मिश्रा की कहानी की किताब *जामलो चलती गई* के माध्यम से कक्षा-5 के विद्यार्थियों के साथ अपनी बातचीत शुरू की। यह महामारी के दौर की एक वास्तविक कहानी है, जो बताती है कि कैसे अलग-अलग सामाजिक पृष्ठभूमि के बच्चों के लिए परिस्थितियाँ अलग-अलग थीं। कहानी की प्रमुख पात्र, जामलो, जो तेलंगाना में एक मिर्च के खेत में काम करती है, महामारी के दौरान सैकड़ों अन्य पुरुषों, महिलाओं और बच्चों के साथ अपने घर की ओर जा रही है। तारा उन्हें टीवी पर देख रही है। राहुल देखता है कि बस्ती और सड़क पर सन्नाटा पसर गया है। आमिर अपने शिक्षक और कक्षा को याद कर रहा है क्योंकि वह ज़ूम पर ऑनलाइन क्लास में उपस्थित है। इस कहानी ने बचपन और बचपन के अनुभवों की विविधता को जानने के लिए एक अवसर बनाया।

शुरुआत में, विद्यार्थी जामलो की सामाजिक वास्तविकता को समझ नहीं पा रहे थे। यह उनकी कल्पना से परे था कि उनकी उम्र का कोई बच्चा प्रवासी मज़दूर हो सकता है। हमें यह स्थापित करने में कुछ समय लगा कि कहानी में उल्लिखित चार पात्र अलग-अलग सामाजिक पृष्ठभूमि से आते हैं इसलिए, उनकी सामाजिक सुरक्षा व संसाधनों तक पहुँच भी अलग-अलग है। अक्षरनन्दन स्कूल शहरी परिवेश में है और अधिकांश विद्यार्थी तुलनात्मक रूप से स्थिर आर्थिक पृष्ठभूमि से आते हैं, जामलो की वास्तविकता और चुनौतियों से जुड़ाव बना पाना उनके लिए आसान नहीं था।

सत्र के दौरान मुझे दो बातें समझ आईं। पहली, विभिन्न सामाजिक इलाक़ों की ऐसी कहानियों की बहुत ज़रूरत है जो अनुभवों और दृष्टिकोणों के एक बड़े दायरे का प्रतिनिधित्व



चित्र-1 : *जामलो चलती गई* कहानी पढ़ते हुए।

करती हों, यानी वास्तविकता का अधिक प्रामाणिक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना। दूसरी, बच्चों को ऐसी वास्तविक कहानियों के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए इन्हें उनके साथ पढ़ना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। कभी-कभी, कहानियाँ आईने की तरह होती हैं, जो दुनिया का एक ऐसा दृश्य पेश करती हैं, जिसे समझा जा सके और जो जाना-पहचाना हो। बाक़ी समय, वे एक खिड़की खोलती हैं, दुनिया के अपरिचित पहलुओं और तत्वों में झाँकने के लिए।

हम सभी की अलग-अलग पहचानें हैं, जिनमें से कुछ हमें सामाजिक और आर्थिक संरचनाओं, जैसे कि जाति, जेंडर, वर्ग, धर्म, आदि द्वारा दी गई हैं। ये सभी हमारे रोज़मर्रा के चुनावों के साथ-साथ हमारे अनुभवों को तय करने में अपनी भूमिका निभाती हैं। ऐसा कक्षा के अन्दर भी होता है। यहीं पर एक शिक्षक या सुगमकर्ता के रूप में हमारी भूमिका आती है — हमारे जीवन को आकार देने वाले सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और राजनीतिक पहलुओं को समझना और उन पर ध्यान देना।

दूसरी कहानी, कॉन्ताँ ग्रेबाँ द्वारा लिखित और चित्रित बरास्ता तरबूज़ थी। इसमें कहानी का प्रमुख पात्र सासौ, उस लड़की से मिलने जा रहा है जिससे उसे प्यार हो गया है। वह अपनी प्रेमिका के लिए उपहार के रूप में 10 तरबूज़ ले जा रहा है। इस सफ़र पर उसके साथ उसके जानवर दोस्त एक गाय, एक ऊँट और एक हाथी हैं। रास्ते में, सासौ सपने देखना शुरू कर देता है कि जब वह और उसकी प्रेमिका मिलेंगे तो क्या करेंगे। कहानी के ये हिस्से, जिनमें सासौ सपने देखता है और लड़कियाँ कैसी होती हैं। इस बारे में अपनी धारणाओं को साझा करता है। उदाहरण के लिए, जब लड़की इस अद्भुत उपहार को देखेगी तो वह क्या करेगी? यक़ीनन वह सासौ को चूमने के लिए उसकी बाँहों में कूद जाएगी। सासौ को इस बात में कोई शक नहीं था कि लड़कियाँ रूमानी होती हैं।

विद्यार्थियों ने लड़कियों के बारे में सासौ की धारणा पर सवाल उठाया और कई उदाहरण दिए कि लड़कियाँ इससे अलग ढंग से व्यवहार करती हैं। उन्होंने यह भी सोचा कि सासौ ने अपनी माँ को भावुक होते देखा होगा या अपने दोस्तों से सुना होगा कि लड़कियों को उपहार पसन्द आते हैं। हमने एक साथ मिलकर इन बाहरी कारकों को चिह्नित किया जिन्होंने लड़कियाँ कैसी होती हैं इसके बारे में सासौ की समझ को सम्भवतः प्रभावित किया होगा। फिर हमने इसे अपने जीवन से जोड़कर देखने की कोशिश की और उन विभिन्न बाहरी कारकों पर चर्चा की जो हमारे विचारों को आकार देते हैं - फ़िल्में, दोस्त, परिवार के सदस्य आदि। कहानी की ख़ास बात यह है कि, अगर हम सासौ को ध्यान से देखें, तो उसमें ख़ुद वे सभी गुण हैं जो उसे लगता है कि लड़कियों में होते हैं। वह रूमानी है, वह संवेदनशील है क्योंकि उसने सफ़र के दौरान अपने किसी जानवर दोस्त को नहीं छोड़ा और वह शर्मीला है। संवेदनशील, रूमानी और शर्मीला होना ऐसे कोमल गुण हैं जो एक जेंडर तक सीमित नहीं हैं। वास्तव में वे सभी जेंडर में पाए जाने वाले मानवीय गुण हैं।

चर्चा का एक और दिलचस्प बिन्दु था कि 'क्या एक लड़का और एक लड़की सिर्फ़ दोस्त हो सकते हैं?' लड़कियों और लड़कों, दोनों ने बताया कि उन्हें एक-दूसरे से जोड़कर छेड़ा जाता है। जब वे पहली या दूसरी कक्षा में थे, तो कोई छेड़खानी नहीं करता था; लड़कियाँ और लड़के सिर्फ़ दोस्त थे लेकिन उम्र बढ़ने के साथ यह बदल गया। उनमें से कई ने इस बात को स्वीकार किया कि जेंडरों के बीच सिर्फ़ एक ख़ास प्रकार के सम्बन्ध होने का प्रचार करने में मीडिया की प्रमुख भूमिका है।

समझने और संवाद में आसानी के लिए दोनों कहानियाँ मराठी (इस स्कूल के विद्यार्थियों की घरेलू भाषा) में पढ़ी गईं। कहानी सुनाने के दौरान विचार-मनन करने का माहौल बनाने के लिए कुछ प्रेरकों का इस्तेमाल किया गया।

सुरक्षित स्थान बनाने की दिशा में

उपरोक्त अनुभवों से और जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, शरीर, भावनाओं और विभिन्न पहचानों के बारे में संवाद जल्दी शुरू हो जाने चाहिए। बड़े होते जाने के साथ कोई अपने शरीर के बारे में क्या महसूस कर रहा है और क्या अनुभव कर रहा है, उसे व्यक्त करने के लिए एक शब्दावली होनी चाहिए। इस तरह के संवाद स्वीकार्यता के प्रति रूढ़िवादी छवियों से जुड़ी असहजता को एक दिशा देते हैं क्योंकि इनके द्वारा लम्बे समय से दमित भावनाएँ और अनुभव उभरकर सामने आते हैं। यह असहजता या शर्म ही है जो हमें जो कुछ भी महसूस होता है उसे बेबाक़ी से अभिव्यक्त करने से रोकती है। उदाहरण के लिए, बड़े होने के दौरान मेरे साथ भी शरीर की छवि से जुड़े मुद्दे थे। मैंने कभी ख़ुद को सुन्दर महसूस नहीं किया क्योंकि मेरे शरीर का आकार और त्वचा का रंग निर्धारित मापदण्डों से अलग था। सामाजिक परिभाषाओं को भूलने और ख़ुद को जैसी हूँ वैसे ही स्वीकार करने में, लम्बा वक़्त लगा और लगातार कोशिश करनी पड़ी। मुझे यह स्वीकार करना पड़ेगा कि यह प्रक्रिया अभी चल ही रही है। लेकिन ऐसे मुद्दों का समाधान तभी किया जा सकता है जब पहले हम उन्हें स्वीकार करें। शिक्षकों के रूप में, विद्यार्थियों के लिए ऐसा स्थान बनाने के लिए पहले हमें चिन्तन-मनन का अन्दरूनी सफ़र तय करना होगा।

शिक्षकों के रूप में, हम अपनी कक्षा की रोज़मर्रा की बातचीत में सीएसई के विषयों के साथ जुड़ाव बनाना शुरू कर सकते हैं।

इसके लिए अलग कक्षा या अतिरिक्त समय की आवश्यकता नहीं है क्योंकि हम हमेशा इसे अन्य विषयों के साथ एकीकृत करने के तरीक़े खोज सकते हैं। कहानियों की किताबें, लघु फ़िल्में, तस्वीरें और कविताएँ सामाजिक मुद्दों पर बातचीत शुरू करने के लिए प्रेरक का काम करती हैं। क्षेत्रीय भाषाओं में ऐसी स्रोत सामग्री उपलब्ध होनी चाहिए जो शिक्षकों के साथ-साथ विद्यार्थियों के लिए भी आसानी से उपलब्ध हो। एक बदलाव जो ज़रूरी होगा वह है नारीवादी नज़रिए से पाठ्यपुस्तकों की कल्पना करना; जिससे पाठ्यपुस्तक की सामग्री और चित्र अधिक समावेशी, समग्र और आलोचनात्मक बनेंगे और इस तरह, सीएसई के विभिन्न विषयों, जैसे कि विभिन्न सामाजिक पहचानों, असमानताओं, मर्दानगी आदि के साथ जुड़ने के लिए व्यवस्थित रूप से जगह बन पाएगी।

व्यापक यौनिकता शिक्षा बच्चों को जानने-समझने का सफ़र शुरू करने के लिए प्रोत्साहित करती है यानी ख़ुद को स्वीकार करना, अपने शरीर और अपने आस-पास के अन्य लोगों के शरीर का सम्मान करना। यह तभी होगा जब यौनिकता शिक्षा सामाजिक निन्दा, दोहरी सीमाओं और जो सही या ग़लत माना जाता है उससे चिपके रहने के अनावश्यक आग्रह के बन्धनों से मुक्त होगी। विद्यार्थियों के साथ एक निरन्तर संवाद उन्हें अपने शरीर को बेहतर ढंग से समझने, उन्हें अपने निर्णयों के नतीजों के बारे में सोचने के लिए तैयार करने, दूसरों की सीमाओं का सम्मान करने और जीवन में स्वस्थ चुनाव व फ़ैसले करने में सहयोग करेगा। महज़ जानकारी ही काफ़ी नहीं है, जो महत्त्वपूर्ण बात है वह है सही-ग़लत के झमेले में न पड़ना, समावेशी होना और अपनी व दूसरों की पसन्द के प्रति सम्मान का दृष्टिकोण विकसित करना। संवाद के लिए एक सुरक्षित स्थान बनाने से विद्यार्थी अधिक आत्मविश्वासी और अपने आप के प्रति सहज हो सकते हैं और मुमकिन है कि वे अपने आस-पास के लोगों के लिए भी वैसा ही सुरक्षित स्थान प्रदान करेंगे।



ईशा बडकस पिछले तीन सालों से एकलव्य के साथ काम कर रही हैं। वे कम्युनिटी एंगेजमेंट एंड एजुकेशन (सीईई) कार्यक्रम का समन्वय करती हैं। उन्होंने अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु से एमए (शिक्षा) किया है। उनकी रुचि संवाद के स्थान बनाकर जेंडर और यौनिकता को और जानने-समझने में है। उनसे *ishabadkas@eklavya.in* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : सीमा **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

मैंने देखा कि एक लड़की देवराज के बगल में खड़ी है और अपने हाथ को इस तरह रख रही है ताकि देवराज का हाथ थाम सके जिससे वह सहज महसूस करे। मैंने महसूस किया कि इस स्वाभाविक दोस्ताना पहल के साथ, वह समाज को एक सुन्दर सबक़ दे रही थी कि समाज को अपने दृष्टिकोण में तब्दीली लाने की ज़रूरत है। लोगों को विकलांग व्यक्तियों के साथ उसी तरह व्यवहार करना चाहिए जैसा वे बाक़ी सभी के साथ करते हैं । हर किसी की अलग-अलग क्षमताएँ होती हैं; कुछ ख़ूबसूरत नृत्य कर सकते हैं और कुछ मीठा गा सकते हैं। तो फिर कुछ लोगों पर 'विशिष्ट रूप से सक्षम' का ठप्पा क्यों लगाया जाता है?

-शौर्या बटारिया,विविध आवश्यकताओं वाले बच्चे : एक शिक्षक क्या कर सकता है, पेज 47